3. शिवनाथ प्रमाणिक

जीवन–परिचय

शिवनाथ प्रमाणिक खोरठा साहित जगतेक एगो दमगर कवि लागथ। इनखर जनम 13 जनवरी 1949 के बोकारोक पासे बइदमारा गाँवे एगो चासा परिवारे हेल हे। बोपेक नाम मुरलीधर प्रमाणिक आर मायेक नाम दुखनी देवी हे। 1968 में हायर सेकेन्ड्री डीएवी चन्द्रपुरा से पास करल बादे बोकारो इस्पात कारखानाञा नौकरी करे लागला। 1972 में प्राइवेट से बी.ए. करला। 1974 में ''डिप्लोमा इन एस.एस.डब्ल्यू'' 1975 में पत्रकारिता कोर्स करल हथ। केन्द्रीय अनुवाद ब्युरो कलकता से प्रशिक्षण लेल बादे 1992 से हिन्दी अनुवादक रूपे ओहे कारखानाञा काम करे लागला जहाँ से ऊ रिटायर 2009 में हेल हथ।

कृति– रूसल पुटुस (सम्पादन,कविता संग्रह), दामुदरेक कोराञ (महा काव्य) तातल आर हेमाल (कविता संग्रह), खोरठा लोक साहित्य (हिन्दी–खोरठा) मइछगंधा (खंडकाव्य), माटीक संग (हिन्दी में) मुइख हे।

सम्मान– जमशेदपुर से काव्य भूषण, चतरा से परिवर्तन 'समान से सम्मानित हेल हथ। झारखंड सरकार 21 सितम्बर 2008 में दस हजार रूपयाक चेक देइके इनखा खोरठाक श्रेष्ठ साहित्यकार रूपे सम्मानित करल हे।

जनवादी कवि रूपे शिवनाथ प्रमाणिक

जनवादी कवि रूपे प्रमाणिक जी के देखे खातिर जनवाद कर माने आर ओकर प्रकृति पर एक नजइर राखल बादे ई खोजब कि सच्चे में उनखर रचनाञा जनवादी भाव हेइया नाञा। मानव समाज के दु बर्गे बाँटल गेल हे–बोड़ लोक (उच्च वर्ग) आर दुसर छोट लोक (कमजोर वर्ग) रूपे अलाइग कोक (उपेक्षित वर्ग) । अलाइग वर्गेक लोक के ऊपर उठवेक प्रवृति के जनवाद कहल जा हे। 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' कर बात तो कहूँ 'मानव मंगल कामनाक भावना से जे साहित लिखाइल जा हे ओकरा जनवादी साहित्य कहल जा हे ओर लिखवइया के जनवादी साहित्यकार।

जनवादी साहितेक मुइख प्रकृति ई रकम हे–

1. **जनवादी साहितेक मुइख आधार**–जनवादी साहितेक मुइख प्रवृति हे अलाइग आर कमजोर वर्ग कर बात करेक। ई प्रवृतिक रचना शिवनाथ प्रमाणिक जीक रचनाञ पावल जा हे। ऊ अइसन लोके ईमान पावल हथ । से ले ऊ लिखल हथ–

''जकर पेटे भात नाञ
लुगे लेपटल गात नाञ
पइब तोञा हुवाँ इमान
ई धरतीक भगवान।
सेवा कर मानुस मात्र
मानुस ले बोड़ केउ नाञ।''

2. **जनवाद खाम खेयालीक (कल्पनाक) विरोधी** –जनवादी साहित्यकार कपोल कल्पना इयानि खाम खेयाली में बिसुआस नाञ करो हथ। ऊ यथार्थवाद में बिसुआस राखोहथ। प्रमाणिक जी कहल हथ–

'' बिन बरसाक तोञ कि आस करे हें
खामखेयाली गात के नसा करे हें
जा जिनगी माटिक जे चिन्हल नखे

अइसन पुता से कि आस करे हें।''

3. जनवाद अन्धबिसुआस पोंगापंथीक बिरोधी—जनवादी साहित्यकार अन्धबिसुआस भाव के पोंगापंथीक कहल हथ। एकरा छोइड़ देवेक बात कहल हथ। ऊ लिखल हथ—

''पोंगापंथी विचार के अबतो मरेक चाही
जिनगीक गाछ ले पुरना पतइ झरेक चाही।''

4. जनवाद में समतावादी भावना—जनवादी रचनाञ जाइत — पाइत, धरम, जनी — मरद, ऊँच — नीच, बोड़—छोट कर भेद भेटाय मेय समतावादी समाजेक कल्पना कर हे। प्रमाणिक जी लिखल हथ—

''मेटाइ देहक ऊँच—नीचेक काँटा—कुसाक डहर
समतावादिक सुरूज उगाइ,आँधार मेटाइ देहक।''

5. जनवाद धार्मिक भावनाक विरोधी— जनवादी रचनाकार सभे पूजा—पाठ, धरमेक नामे मूर्ति पूजाक घोर विरोधी हथ इयानि हियाँ ओखिन में नास्तिक भाव पावा हे। ई भावनाक कविता हे—

जे देसे दुर्गाक पूजा करे
से देसे जनीक पाहूर परे तावो लोक भूखे मरे
माटीक देवी के हवे मान सरोसती जहाँ जा ही पुजल
बेटी संगे तिलक दान तावो मुलुक मुरूख बनल।''
जे देसे लखी पूजा करे

6. जनवाद सोसनेक विरोधी —जनवाद में शोषित वर्ग' जे उपेक्षित हे, अलाइग हे, सोसनेक सिकार बन हे ओकरा जगावेक कोसिस करो हे। ओकरा जगाइके ओकर में करान्तिक बीज रोप हे—

'' लुट ओकरा जे लूटो हो तोरा, लुटाइल लोक के काहे लूटे हैं,
पीट ओकरा जो पीटो हो तोरा,पीटाइल लोक के काहे पीट हें।

'सुरूज आर रोटी' पाठे हे—

''बोड भेल परे हाम्हु
पुलिस के बताइ देबई
रोटी माने कि हवे ?
हम हुलमाइल—हुलस्थुल/कइर देबइ
हम उलगुलान कइर देबइ
साखी रहियें लाल सुरूज।''

7. जनवाद मानव हितैषी— जनवादी रचनाकार सभे मानव हितेक बात करो हथ। प्रमाणिक जी माञ,माटी, मानुस आर मातरी भासक बात बराबइर करो हथ—

''माञा—माटीक मानुसेक हिते जोदि जियो मोरो काम कर हें
खाँटी मानुसेक जीव तोर पासे, खाँटी मानुसेक काम करें हें।

8. जनवाद क्रान्तिक पोषक— समाज के दु वर्गो बाँटल गेल हे— ऊँच वर्ग आर निम्न वर्ग। ऊँच वर्गे सामन्त, शोषण,सवार्थी आवहथ आर निम्न वर्गे कमजोर, उपेक्षित, शोषित, कमनिहार (श्रमिक) वर्ग आवहथ। प्रमाणिक जी गातेक दुइयो हाथ—दहिना आर बावाँ हाथ के प्रतीक रूपे माइन के बावाँ हाथ कविता लिखल हथ, जकर में दहिना हाथ के सवारथी हाथ कहल हथ आर बावाँ हाथ के कमनिहार, अरजनिहार हाथ। करान्ति बात हियाँ हे—

''खबरदार दहिना हाथ छोइड़ देलथुन जाइत—पात

पोंगापथी सवारथी हाथ तोरबथुन अब तोर दाँत
बखरा आपन होने ले देबथुन हुलस्थुलेक साड़ा
अधिकार आपन छीनेले पइना लइ घुरइबथुन माड़ा।''

ई नीयर नजइर गबचाइ के (समीक्षात्मक) रूपे देखल जाय तो ई आयाँ पावल जाहे कि प्रमाणिक जीक रचनाञ जनवादी भाव पावा हे। सेई खातिर इनखर जनवादी कवि कहल जाहे, एकर में काई दु मत नाञ, अतिशयोक्ति नाञ हे।

भाषा–शैली– शिवनाथ प्रमाणिक कर भासा एकदम सरल, सहज आर प्रवाहमय हे। ई कविता के सस्वर पाठ करो हथ तो ककरो गायो के सुनाव हथ। गीत में ओज शैली, रस में वीर रस, देशभक्ति आर मानववादी, जनवादी भाव रहहे। छन्द में तुकान्त, अतुकांत दुइयों रकमेक छन्द पावा हे।